भारतीय चित्रकला (भाग-I)

प्रिलिम्स के लिये:

भारतीय चित्रकला, मुगल और राजपूत शैली, चित्रकला के सिद्धांत, भीमबेटका के शैल चित्र, सिंधु घाटी सभ्यता के चित्रित मिट्टी के बर्तन, वात्स्यायन का कामसूत्र, रूपभेद, सदृस्यान, भाव, वर्णिकाभंगा, प्रमाणम, लावण्ययोगनम, लेप्य चित्र, प्रागैतिहासिक चित्रकला,पेट्रोग्लिफ्स, 'चिड़ियाघर रॉक शेल्टर', भित्ति चित्र, अजंता गुफा चित्रकला, एलोरा गुफा चित्रकला, अरमामलाई गुफा चित्रकला, जोगीमारा गुफा चित्रकला, लघु चित्रकला, पाल स्कूल ऑफ आर्ट, अपभ्रंश स्कूल ऑफ आर्ट, दिल्ली सल्तनत के दौरान लघु कला, नमितनामा (पाक कला पर एक किताब), मुगल काल की लघु चित्रकला, संक्षिप्तीकरण की तकनीक, तसवीर खाना, तूतीनामा (एक तोते की कहानी), सुलेख, राजस्थानी चित्रकला शैली, मेवाड़ चित्रकला शैली, साहिबदीन, 'तमाशा' पेंटिंग, किशनगढ़ चित्रकला शैली, बनी-ठनी, चित्रकला की पहाड़ी शैली, जम्मू या डोगरा स्कूल, कांगड़ा स्कूल, बशोली स्कूल, रागमाला पेंटिंग, दक्षिण भारत में लघुचित्र, तंजौर पेंटिंग, मैसूर पेंटिंग, गेसो पेस्ट', आधुनिक पेंटिंग, कंपनी पेंटिंग, बाज़ार पेंटिंग, राजा रवि वर्मा, पूर्व का राफेल, रंग रसिया, बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट, अभनींद्रनाथ टैगोर, भारत माता, रवींद्रनाथ टैगोर, पेंटिंग की क्यूबिस्ट शैली, एम.एफ.हुसैन, रोमांस का व्यक्तित्व, प्रगतिशील कलाकार समूह।

मेन्स के लिये:

भारत में चित्रकला का विकास, प्रागैतिहासिक चित्रकला के संरक्षण की आवश्यकता, अतीत के ऐतिहासिक अभिलेखों के रूप में चित्रकारी, चित्रकला के साथ भारतीय दर्शन का मिश्रण।

संदर्भ:

भारत में **कलात्मक उत्कृष्टता की एक लंबे समय से चली आ रही परंपरा है, जिसमें चित्रकला अपनी अभिव्यक्ति के लिये एक प्रमुख माध्यम के रूप में उभर रही है,** जो प्राचीन काल से देश में फल-फूल रही है। चित्रकला के इतिहास का पता प्राचीन और मध्ययुगीन काल से लगाया जा सकता है जहाँ पुस्तकों को चित्रों के साथ चित्रित किया जाता था। **मुगल और राजपूत दरबारों में लघु शैली का बोलबाला था।** यूरोपीय लोगों के आगमन के साथ चित्रकला और उत्कीर्णन की कला ने पश्चिमी स्वरूप ले लिया।

- **चित्रकला का इतिहास भीमबेटका, मिर्ज़ापुर तथा पंचमढ़ी के आदमि शैलचित्रों से जाना जा सकता है।** उनके बाद सिंधु घाटी सभ्यता के चित्रित मिट्टी के बर्तनों का प्रचलन हुआ लेकिन चित्रकला की कला की वास्तविक शुरुआत गुप्त युग से हुई।

चित्रकारी के सिद्धांत क्या हैं?

- तीसरी शताब्दी ईस्वी में **वात्स्यायन ने अपनी पुस्तक कामसूत्र में चित्रकला के छह मुख्य सिद्धांतों/अंगों या षडंगों का उल्लेख किया है।** वे हैं:
    - रूप की विविधता - रूपभेद
    - विषय की सादृश्यता का निरूपण - सदृस्यान
    - रंगों से दीप्ति और चमक का सृजन- भाव
    - मॉडलिंग के प्रभावों से मिलता-जुलता रंगों का मिश्रण - वर्णिकाभंगा
    - वस्तु या विषय का समानुपात - प्रमाणम्
    - भावों का विसर्जन - लावण्यायोगनम्
- **ब्राह्मणवादी और बौद्ध साहित्य में चित्रकला की कला** के कई संदर्भ हैं, उदाहरण के लिये, वस्त्रों पर मिथकों तथा विद्या का प्रतिनिधित्व **लेप्या चित्र** के रूप में जाना जाता है।
- **विशाखदत्त के नाटक मुद्राराक्षस** में **विभिन्न चित्रों या पटों** के नामों का भी उल्लेख है, जो चित्रों की विभिन्न शैलियों को समझने और चित्रों के सभी सिद्धांतों का पालन करने के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रागैतिहासिक चित्रकला क्या हैं?

परिचय:

- प्रागैतहािसिक काल की चित्रकारी आम तौर पर चट्टानों पर की जाती थी और इन चट्टानों पर की गई नक्काशी को **पेट्रोग्लिफ** कहा जाता था। प्रागैतहािसिक चित्रों को सर्वप्रथम वर्ष 1957-58 में मध्य प्रदेश में भीमबेटका गुफाओं में खोजा गया था।
- इन चित्रों को **'चिड़ियाघर रॉक शेल्टर'** कहा गया है क्योंकि इनमें **हाथी**, **गैंडा**, **मवेशी**, **साँप**, **चितीदार हरिण**, **बारासिंघा** आदि का चित्रण है।

तीन प्रमुख चरण:

- **उच्च पुरापाषाण काल (40000-10000 ईसा पूर्व):** शैलाश्रय गुफाओं की दीवारें क्वार्टज़ाइट से बनी थीं और इसलिये उनमें रंगद्रव्य के लिये खनिजों का उपयोग किया जाता था।
- सबसे **मुख्य खनिज गेरू था, जिसे चूने और पानी** के साथ मिलाया जाता था।
    - **सफेद**, **गहरे लाल और हरे रंग का उपयोग बड़े जानवरों** जैसे बाइसन, हाथी, गैंडा, बाघ आदि को चित्रित करने के लिये किया जाता था। मानव मूर्तियों के लिये, **लाल रंग का उपयोग शिकारियों के लिये और हरे रंग का उपयोग अधिकतर नर्तकियों के** लिये किया जाता था।

Man and humped bulls in different colours from Bhimbetka - World Heritage List of UNESCO

//

- **मध्यपाषाण काल (10000-4000 ई.पू.):** इस काल में मुख्यतः **लाल रंग का प्रयोग** देखा गया। उच्च पुरापाषाण काल की तुलना में इस **काल में चित्रों का आकार भी छोटा** हो गया।
    - इन चित्रों में चित्रित सबसे **आम दृश्य समूह शिकार के हैं और कई अन्य चित्रों में चराई गतिविधि तथा सवारी के दृश्य दर्शाए गए हैं।**

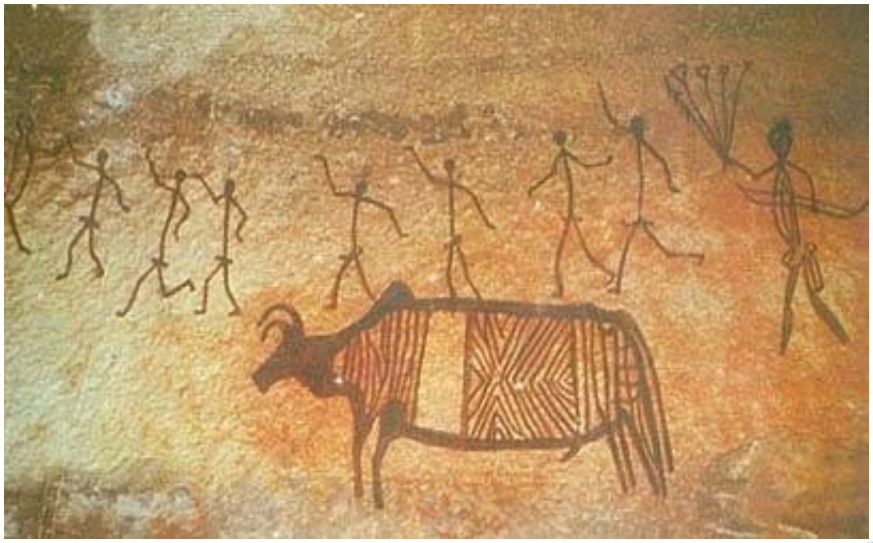

- **ताम्रपाषाण काल (3500 ई.पू.-1000 ई.पू.):** इस अवधि में **हरे और पीले रंगों का उपयोग करने वाली पेंटिंग्स की संख्या में वृद्धि** देखी गई।
  - अधिकांश पेंटिंग युद्ध के दृश्यों को चित्रित करने पर केंद्रित हैं।
- ताम्रपाषाण काल की कुछ पेंटिंग छत्तीसगढ़ के सरगुजा ज़िले में **रामगढ़ पहाड़ियों में जोगीमारा गुफाओं** में देखी जा सकती हैं। इन्हें लगभग 1000 ईसा पूर्व चित्रित किया गया माना जाता है।

भीमबेटका रॉक पेंटिंग क्या हैं?

- **परिचय:**
  - यह मध्य प्रदेश की विंध्यन पर्वतमाला में भोपाल के दक्षिण में स्थित है। शैलाश्रयों में **500 से अधिक शैलचित्र** हैं। इसे **वर्ष 2003 में** यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
    - अनुमान है कि सबसे पुरानी चित्रकला 30,000 वर्ष पुरानी हैं और गुफाओं के अंदर गहराई में स्थित होने के कारण बची हुई हैं।
  - **100,000 ईसा पूर्व से 1000 ईस्वी तक** गुफाओं के अधिवास में उल्लेखनीय निरंतरता है, जिसमें कई **चित्र एक दूसरे के ऊपर चित्रित किये गए हैं।**
  - भीमबेटका की चित्रकला **उच्च पुरापाषाण, मेसोलिथिक, ताम्रपाषाण**, **प्रारंभिक ऐतिहासिक और मध्ययुगीन काल से संबंधित हैं।** हालाँकि, **अधिकांश चित्रकला मध्यपाषाण युग की हैं।**
    - **दैनिक कार्यों का चित्रांकन:** चित्रकला आमतौर पर छड़ी जैसी मानव आकृतियों में प्रागैतिहासिक पुरुषों के **रोज़मर्रा के जीवन को चित्रित** करती हैं। हाथी, बाइसन, हिरण, मोर और साँप जैसे विभिन्न जानवरों को चित्रित किया गया है।
    - **शिकार के दृश्य का वर्चस्व:** चित्रों में **शिकार के दृश्य और युद्ध के दृश्य** भी दिखाए जाते हैं जिनमें धनुष, तीर, भाले, ढाल तथा तलवार जैसे हथियार ले जाने वाले पुरुष होते हैं।
    - **ज्यामितीय प्रतीकों का उपयोग:** कुछ चित्रों में सरल ज्यामितीय डिज़ाइन और प्रतीक भी होते हैं। **चित्रों के अन्य विषय नृत्य, संगीत, जानवरों की लड़ाई, शहद संग्रह आदि हैं।**
    - **सामाजिक जीवन का चित्रण:** बच्चों के खेलने, भोजन बनाने वाली महिलाओं, सामुदायिक नृत्य आदि की उपस्थिति के साथ सामाजिक जीवन का अच्छी तरह से चित्रण किया गया है।

भारतीय चित्रकला का वर्गीकरण क्या है?

भारत में भित्तिचित्र

- **दीवारों अथवा किसी ठोस संरचना पर किये गए कार्यों** को भित्तिचित्र कहा जाता है। ये भारत में प्राचीन काल से मौजूद हैं और इन्हें 10वीं शताब्दी ईसा पूर्व से 10वीं शताब्दी ईस्वी के बीच का माना जा सकता है।
- भित्तिचित्र अपने **विशाल आकार के कारण अद्वितीय** हैं। उन्हें कागज़ पर समाहित नहीं किया जा सकता है साथ ही उन्हें बड़ी संरचनाओं, आमतौर पर गुफाओं और मंदिर की दीवारों की दीवारों पर निष्पादित करने की आवश्यकता होती है।
- प्राचीन काल में, इनका उपयोग तीन प्रमुख धर्मों द्वारा किया जाता था: **बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं हिंदू धर्म**। भित्तिचित्रों के कुछ सर्वोत्तम उदाहरण हैं:
  - **अजंता गुफा चित्र:**
    - **अजंता की गुफाएँ** चौथी शताब्दी ईस्वी में ज्वालामुखीय चट्टानों से बनाई गई थीं। इसमें **30 गुफाओं का एक शृंखला** है, जो **घोड़े की नाल के आकार** में है। ये गुफाएँ अपने उत्कृष्ट भित्तिचित्रों के लिये काफी लोकप्रिय हैं, जिन्हें **मौर्य साम्राज्य** के शासनकाल में **पूरा होने में लगभग चार से पाँच शताब्दियाँ** लगीं।

        - गुफा संख्या में भित्तिचित्रि **9 तथा 10 शुंग काल** के हैं, जबकि शेष गुप्त काल के हैं। गुफाओं की दीवारों पर भित्तिचित्रि एवं भित्तिचित्रि (गीले प्लास्टर पर चित्रित) दोनों हैं। वे **टेम्पेरा शैली का उपयोग** करते हैं, अर्थात् रंगद्रव्य का उपयोग करते हैं।
        - इन चित्रों के सामान्य विषय जातक कथाओं से लेकर बुद्ध के जीवन से लेकर वनस्पतियों और जीवों के विस्तृत सजावटी पैटर्न तक हैं।
    - **एलोरा गुफा चित्र:**
        - एलोरा की गुफाओं में **भित्ति चित्र पाँच गुफाओं** में प्राप्त किये जाते हैं, जो **अधिकतर कैलासा मंदिर तक ही सीमित** हैं। ये भित्तिचित्रि दो चरणों में बनाए गए थे।
            - पहले चरण की चित्रकारी गुफाओं की नक्काशी के दौरान की गई थी, जबकि दूसरे चरण की चित्रकारी कई सदियों बाद की गई थी।
        - **पहले के चित्रों में विष्णु को उनकी पत्नी लक्ष्मी के साथ** आकाशीय पक्षी गरुड़ द्वारा बादलों के बीच से ले जाते हुए दिखाया गया है। **गुजराती शैली में बने बाद के चित्रों में शैव पवित्र पुरुषों के जुलूस का चित्रण** किया गया है।
    - **अरमामलाई गुफा चित्र:**
        - अरमामलाई गुफा चित्रकला तमिलनाडु के वेल्लोर ज़िले में स्थित हैं, इन प्राकृतिक गुफाओं को **8वीं शताब्दी में जैन मंदिर में परिवर्तित** कर दिया गया था। गुफा के भीतर कच्ची मिट्टी की संरचनाएँ स्थित हैं, जो जैन संतों के लिये विश्राम स्थल के रूप में रही थी।
        - दीवारों एवं छत पर सुंदर रंगीन पेंटिंग **अष्टथिक पालकों** (आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवता) के साथ ही **जैन धर्म की कहानियों** को दर्शाती हैं।
    - **जोगीमारा गुफा चित्रकला:**
        - जोगीमारा गुफा चित्रकला **छत्तीसगढ़** के **सरगुजा ज़िले** में स्थित एक कृत्रिम रूप से निर्मित नक्काशीदार गुफा है। यह लगभग 1000-300 ईसा पूर्व का है और इसमें ब्राह्मी लिपि में एक प्रेम कहानी के कुछ चित्र एवं शिलालेख शामिल हैं।
        - ऐसा कहा जाता है कि **गुफा रंगभूमि से जुड़ी** हुई थी और साथ ही कमरे को सजाने के लिये चित्रकला बनाई गई थीं।

लघु पेंटिंग

परिचय:

- 'मिनिएचर' शब्द लैटिन शब्द 'मिनियम' से लिया गया है, जिसका अर्थ है लाल सीसे वाला पेंट। इस **पेंटिंग का उपयोग पुनर्जागरण काल के दौरान प्रबुद्ध पांडुलिपियों में** किया गया था।
- यह आमतौर पर न्यूनतम शब्द के साथ भ्रमित होता है, जिसका अर्थ होगा कि वे **आकार में छोटे** थे। **भारतीय उपमहाद्वीप में इन लघु चित्रों की लंबी परंपरा** है और साथ ही इसके कई स्कूल विकसित हुए हैं जिनकी रचना एवं परिप्रेक्ष्य में अंतर है। ये लघुचित्र छोटे एवं विस्तृत चित्र हैं।
- **चित्रकला 25 वर्ग इंच से अधिक बड़ी नहीं** होनी चाहिये। पेंटिंग का विषय वास्तविक आकार के **1/6 से अधिक नहीं होना** चाहिये।
- आमतौर पर उनकी आँखें उभरी हुई, नुकीली नाक तथा कमर पतली होती है।

प्रारंभिक लघुचित्र: आरंभिक लघुचित्र प्रारंभ में कम परिष्कृत थे, जिनमें **न्यूनतम सजावट** थी। समय के साथ, वे अधिक **विस्तृत अलंकरणों को शामिल** करने के लिये विकसित हुए, अंततः आज के लघुचित्रों के समान बन गए, जो इस चित्रकला के प्रारंभिक चरण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

- इन्हें प्राय: कागज़, ताड़ के पत्तों तथा कपड़े सहित खराब होने वाली सामग्री पर किताबों अथवा एल्बमों के लिये चित्रित किया जाता था। ये पेंटिंग 8वीं से 12वीं शताब्दी के बीच विकसित हुईं और इसका श्रेय पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्रों को दिया जा सकता है। प्रारंभिक **लघु चित्रकला के दो प्रमुख शाखा** हैं:
- **चित्रकला की पाल शाखा: यह शाखा 750-1150 ई. के दौरान फल-फूल रही थी। ये पेंटिंग आमतौर पर बौद्ध पांडुलिपियों के रूप में पाई जाती हैं और साथ ही आमतौर पर ताड़ के पत्ते अथवा चर्मपत्र पर बनाई जाती थीं।**
    - इन चित्रों की विशेषता टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं एवं पृष्ठभूमि चित्रण के धीमे स्वरों की विशेषता है। चित्रों में एकाकी एकल आकृतियाँ हैं और साथ ही समूह चित्र कम ही प्राप्त होते हैं।
    - बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा के समर्थकों ने भी इन चित्रों का उपयोग एवं संरक्षण किया।
- **अपभ्रंश कला शाखा:** इस शाखा की उत्पत्ति गुजरात एवं राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र से हुई है। यह 11वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी भारत में चित्रकला का प्रमुख शाखा थी।
    - इन चित्रों के सबसे सामान्य विषय जैनधर्म से था और बाद के काल में वैष्णव संप्रदाय ने भी इन्हें अपना लिया।

Fig. 2.13: *Apabhramsa school of art*

- **संक्रमण काल लघुचित्र:** भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिमों का आना परिवर्तन का संकेत था और साथ ही यह 14वीं शताब्दी में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का काल भी था।

ig. 2.14: *Transition period miniature*

- [दिल्ली सल्तनत](#) **में लघुचित्र:** इन चित्रों ने अपने मूल के फारसी तत्त्वों को पारंपरिक भारतीय तत्त्वों को एक साथ लाने का प्रयास किया।
  - इस काल का सर्वोत्तम उदाहरण **मांडू पर शासन करने वाले नासिर शाह** के शासनकाल के दौरान **निमतनामा (पाक कला पर एक पुस्तक)** है।

- **मुगल काल के लघुचित्र: मुगल काल में बनाए गए चित्रों** की एक विशिष्ट शैली थी क्योंकि वे **फारसी पृष्ठभूमि से** ली गई थीं।
  - रंग पैलेट, थीम एवं रूपों में बदलाव आया। यह **ईश्वर का चित्रण करने से हटकर शासक की महिमा करने एवं उसके जीवन को दर्शाने पर केंद्रित** हो गई।
  - उन्होंने शिकार के दृश्यों, ऐतिहासिक घटनाओं एवं न्यायालय से संबंधित अन्य चित्रों पर ध्यान केंद्रित किया।
  - चित्रकारों को **रेखाचित्रों की सटीकता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित** करना था। धार्मिक चित्रकलाओं को छोड़कर, मुगल अपने **विविध विषयों के लिये** जाने जाते थे।
  - वे भारतीय चित्रकारों के प्रदर्शनों की सूची में **लघुकरण की तकनीक** लेकर आए। इस तकनीक के तहत, **"वस्तुओं को इस तरह से खींचा जाता था कि वे वास्तव में जितनी वे हैं उससे अधिक करीब और छोटी दिखती थीं।"**

उत्तरोत्तर शासकों के अधीन चित्रकला की शैलियाँ इस प्रकार हैं:

मुगल सम्राट	चित्रकला में योगदान	उल्लेखनीय कलात्मक उपलब्धियाँ
बाबर	मुगल चित्रकला के लिये फारसी कलाकार **बिहज़ाद को संरक्षण** दिया।	अल्प शासनकाल के कारण **प्रत्यक्ष भागीदारी सीमित** रही।

हुमायूँ	चित्रकला के महान संरक्षक, **मुगल चित्रकला पर फारसी प्रभाव** डाला तथा सचित्र एल्बम बनाए।	**फारसी कलात्मक शैलियों को बढ़ावा** दिया और मुगल चित्रकला को प्रभावित किया।
अकबर	**वेतनभोगी चित्रकारों** के साथ एक औपचारिक कलात्मक स्टूडियो, **तस्वीर खाना की स्थापना** की। सचित्र पांडुलिपि **"तूतीनामा" की रचना** की। **चित्रों में सुलेख को प्रोत्साहित** किया।	प्रमुख पांडुलिपियाँ: **तूतीनामा (एक तोते की कहानी), हमज़ानामा, अनवर-ए-सुहैली** तथा **सादी का गुलिस्तान।**
जहाँगीर	मुगल **चित्रकला के चरमोत्कर्ष** पर पहुँचे। **वनस्पतियों एवं जीवों (पक्षी, जानवर, पेड़, फूल) जैसे प्राकृतिक विषयों को प्राथमिकता** दी जाती है। **चित्रों के चारों ओर सजाए गए हाशिये का चलन** शुरू किया गया।	जहाँगीर स्वयं एक कुशल कलाकार था। **ज़ेबरा, टर्की और मुर्गे के प्राकृतिक चित्रों** के लिये जाना जाता है।
शाहजहाँ	**यूरोपीय कला से प्रभावित** होकर जीवंतता को कम करने एवं शांति का परिचय देने का प्रयास किया गया। **स्केचिंग के लिये पेंसिल के उपयोग को प्रोत्साहित** किया। चित्रकला में **सोने और चाँदी का उपयोग** बढ़ा साथ ही **चमकीले रंग पैलेट को प्राथमिकता** दी गई।	कलात्मक शैली यूरोपीय प्रभाव एवं शांति और समृद्धि में बदलाव से चिह्नित होता है।
औरंगज़ेब	**चित्रकला को प्रोत्साहित नहीं** किया, जिसके परिणामस्वरूप **मुगल दरबार के चित्रकारों का राजस्थान जैसे क्षेत्रों में प्रांतों में प्रवास** हुआ।	उनके शासनकाल के दौरान **मुगल चित्रकला के पतन** में योगदान दिया।

क्षेत्रीय चित्रकला शाखा: क्षेत्रीय कला शाखा ने अपनी भारतीय मूल शैली के साथ ही अधिक प्राकृतिक मुगल शैली के विपरीत रंगीन चित्रों के प्रति रुचि को प्रदर्शित किया। इस अवधि में विकसित हुए विभिन्न शाखा तथा शैलियाँ इस प्रकार थीं:

- **राजस्थानी चित्रकला शैली: यह चित्रकला की राजपूत शैली का पर्याय है। राजस्थानी चित्रकला की कई उप-शैलियाँ हैं जो उनकी मूल रियासत के अनुरूप भी हैं।**
  - **मेवाड़ चित्रकला शैली:** मेवाड़ चित्रकला में **साहिबदीन की असाधारण छवि का प्रभुत्व** है। मेवाड़ी चित्रकला का यह काल साहिबदीन के साहित्यिक ग्रंथों **रसिकप्रिया, रामायण एवं भागवत पुराण** के चित्रण पर केंद्रित है।
    - इस काल का अनूठा विशेष असाधारण **'तमाशा' चित्रकला** शैली हैं जो अभूतपूर्व विस्तार से दरबारों के समारोहों एवं शहर के दृश्यों को दर्शाती हैं।
  - **किशनगढ़ चित्रकला शैली:** किशनगढ़ चित्रकला शैली सबसे रोमांटिक किंवदंतियों - सावंत सिंह और उनकी **प्रिय बणी-ठणी** के साथ-साथ जीवन एवं मिथकों, रोमांस तथा भक्ति के अंतर्संबंध से जुड़ी हुई है। कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है कि **बणी-ठणी' में महिलाएँ राधा के चरित्र के समान प्रतीत** होती हैं।
- **चित्रकला की पहाड़ी शैलियाँ: चित्रकला की यह शैली उप-हिमालयी राज्यों में विकसित हुई जो मुगल आधिपत्य के अधीन थे। इसलिये, पहाड़ी चित्रकला को दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है:**
  - **जम्मू या डोगरा शाखा:** उत्तरी शृंखला
  - **बशोली तथा कांगड़ा शाखा:** दक्षिणी शृंखला
  - एक विशिष्ट पहाड़ी चित्रकला कैनवास में कई आकृतियाँ लाती है। प्रत्येक आकृति संरचना, रंग एवं रंजकता में भिन्न होती है।
  - **बशोली शाखा:** यह शुरुआती चरण था इसमें पीछे हटती बालों की रेखा के साथ ही कमल की पंखुड़ियों के आकार की बड़ी आँखों वाले अभिव्यंजक चेहरे इसकी विशेषता बताते हैं। इन चित्रों में बहुत सारे प्राथमिक रंगों का उपयोग किया जाता है, जैसे कि लाल, पीला तथा हरा। उन्होंने कपड़ों पर पेंटिंग की मुगल तकनीक का प्रयोग किया गया और साथ ही अपनी विशिष्ट शैली एवं तकनीक विकसित की।
  - **कांगड़ा शाखा:** इन चित्रों में **कामुकता एवं बुद्धिमत्ता का चित्रण** किया गया था, जिसका अन्य शाखा में अभाव था। **चित्रों का सबसे प्रसिद्ध समूह 'ट्वेल्व मंथ्स'** है जहाँ **कलाकार ने बारह महीनों के प्रभाव को मनुष्य की भावनाओं के अनुसार प्रदर्शित** करने की कोशिश की गई।

क्या भारतीय चित्रकला की अधिकांश शैलियों में कोई एक समान चित्रकला शैली है?

- **रागमाला चित्रकला:** रागमाला चित्रकला मध्यकालीन भारत की रागमाला या **'रागों की माला'** पर आधारित चित्रों की एक शृंखला है, जो विभिन्न भारतीय संगीत रागों को दर्शाती है। यह मध्यकालीन भारत में कला, कविता और शास्त्रीय संगीत के मिश्रण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **रागमाला चित्रकला** 16वीं और 17वीं शताब्दी में चित्रकला के **अधिकांश भारतीय शैलियों में निर्मित है,** आज इन्हें **पहाड़ी रागमाला, राजस्थान या राजपूत रागमाला, दक्कन रागमाला तथा मुगल रागमाला** का नाम दिया गया है।
- इस चित्रकला में, **प्रत्येक राग को एक विशेष रूप में नायक और नायिका** (नायक और नायिका) की कहानी का वर्णन करने वाले रंग द्वारा व्यक्त किया गया है। यह **मौसम, दिन और रात के समय को भी स्पष्ट करता** है, जिसमें एक विशेष राग गाया जाना है।
- इसके अतिरिक्त, कई चित्रकला राग से जुड़े विशिष्ट हिंदू देवताओं का भी सीमांकन करती हैं, जैसे कि भैरव या भैरवी से शिव, श्री से देवी आदि। **रागमाला में मौजूद छह प्रमुख राग हैं भैरव, दीपक, श्री, मालकौश (Malkaush), मेघा और हिंडोला।**

दक्षिण भारत में लघुचित्र (Miniatures)

- इन चित्रों में **सोने के अधिक उपयोग** के कारण दक्षिण भारतीय राज्यों में लघु चित्र के निर्माण का चलन उत्तर भारतीय शैलियों से भिन्न है। इसके अतिरिक्त **इन चित्रों में शासकों को चित्रित करने की तुलना में दिव्य प्राणियों को चित्रित करने पर अधिक ध्यान केंद्रित** किया, जिन्होंने संरक्षण प्रदान किया था। **कुछ प्रमुख शैलियाँ इस प्रकार हैं:**

तंजावुर चित्रकला: तंजावुर या तंजौर शैली **सजावटी चित्रकला (decorative paintings) की विशेष शैली के लिये प्रसिद्ध** है। 18वीं शताब्दी के दौरान **मराठा शासकों ने इस शैली को संरक्षण** प्रदान किया था।

- ये चित्रकला अद्वितीय है क्योंकि ये उत्तर भारत में सबसे ज़्यादा पसंद किये जाने वाले**कपड़े और चर्मपत्र के बजाय काँच तथा बोर्ड पर बनाई** जाती हैं। **शानदार रंग पैटर्न के साथ-साथ सोने की पत्ती का उपयोग** इन चित्रों की विशिष्टता है।
- इसमें जीव से भी बड़ी **छवियाँ बनाने हेतु अलंकरण के लिये कई प्रकार के रत्नों** और **कटे हुए काँच के टुकड़ों** का उपयोग किया गया है।
    - ये चित्रकला **सरफोजी महाराज के संरक्षण में अपने चरम पर पहुँची**, जो कला के महान संरक्षक थे।

मैसूर चित्रकला: इस **चित्रकला को मैसूर प्रांत के शासकों द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया है,** जिसे ब्रिटिश काल में भी जारी रखा गया।

- इस चित्रकला में **म्यूट रंगों (muted colour) का उपयोग होता है, जो इतने चमकीले नहीं होते कि पृष्ठभूमि को प्रभावित कर सकें।**
- मैसूर चित्रकला का **प्रमुख विषय हिंदू देवी-देवताओं का चित्रण** है। इन चित्रों की अनोखी बात यह है कि इनमें**प्रत्येक चित्र में दो या दो से अधिक आकृतियाँ होती हैं और एक आकृति आकार तथा रंग में अन्य सभी आकृतियों से अधिक प्रभावी होती है।**
    - इस चित्रकला में **'गेसो पेस्ट (gesso paste)'** तकनीक का उपयोग होता है, जो **जिंक ऑक्साइड और अरबी गोंद का मिश्रण है।** यह चित्रकला को एक विशेष आधार प्रदान करता है, जिससे पृष्ठभूमि पर चमक विकसित होती है।

आधुनिक चित्रकला

कंपनी पेंटिंग: औपनिवेशिक काल में, **चित्रकला की एक मिश्रित शैली** उभरी जिसने राजपूत, मुगल और चित्रकला की अन्य **भारतीय शैलियों के तत्त्वों को यूरोपीय तत्त्वों** (शैलियों और तकनीकों) के साथ जोड़ा।

- ये चित्रकला तब **विकसित हुई, जब ब्रिटिश कंपनी के अधिकारियों ने भारतीय शैलियों में प्रशिक्षित चित्रकारों को नियुक्त किया** । उन्होंने **अपने नियोक्ताओं के भारतीय प्रशिक्षण के साथ यूरोपीय भाव को मिश्रित किया। इसे 'कंपनी पेंटिंग्स' कहा जाता था।**
- **इनमें जलीय रंगों के उपयोग और तकनीक में रैखिक परिप्रेक्ष्य एवं छायांकन (perspective and shading**) की उपस्थिति इन्हें आकर्षक बनाती है।
- **लॉर्ड इम्पे और मार्क्वेस वेलेस्ले ने चित्रकारों को संरक्षण दिया;** कई चित्रकार भारत की 'विदेशी' वनस्पतियों तथा जीवों को चित्रित करने में लगे हुए थे।

बाज़ार पेंटिंग (Bazaar Painting): यह शैली भी भारत में **यूरोपीय शैलियों से प्रभावित थी।** ये कंपनी पेंटिंग से भिन्न है क्योंकि **इस शैली में यूरोपीय तकनीकों और विषयों को भारतीय शैली के साथ मिश्रित किया गया था।**

- **बाज़ार शैली ने भारतीय शैली से प्रभावित नहीं है बल्कि रोमन और यूनानी शैलियों से अधिक प्रभावित है।** इस शैली में चित्रकारों ने **ग्रीक और रोमन मूर्तियों की नकल की है।**
- यह शैली **बंगाल तथा बिहार क्षेत्र में प्रचलित** थी।
- ग्रीको-रोमन विरासत के हिस्से के रूप में, **इस शैली में रोज़मर्रा के लिये बाज़ार पेंटिंग बनाई गईं, जिसमें भारतीय बाज़ारों को यूरोपीय पृष्ठभूमि के साथ दिखाया गया था।**
- सबसे प्रसिद्ध शैलियों में से एक **ब्रिटिश अधिकारियों के सामने भारतीय वेश्याओं** को नृत्य करते हुए चित्रित करना था। इस शैली में धार्मिक विषयों को भी चित्रित किया, लेकिन भगवान गणेश **जैसे दो से अधिक कुल्हाड़ियों और हाथी के चेहरे वाले भारतीय देवी-देवताओं की आकृतियाँ निषिद्ध थीं क्योंकि वे प्राकृतिक मानव मूर्ति की यूरोपीय धारणा से भिन्न थीं।**

बंगाल चित्रकला शैली: माना जाता है कि बंगाल शैली का वर्ष 1940-1960 के दशक की **चित्रकला की मौजूदा शैलियों के प्रति प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण** था। यह शैली अनोखी शैली है क्योंकि **इसमें साधारण रंगों का उपयोग किया जाता है।**

- **बंगाल शैली का विचार** 20वीं सदी की शुरुआत में **अभनींद्रनाथ टैगोर के कार्यों से सामने आया।** उन्होंने **भारतीय कला में स्वदेशी मूल्यों को शामिल करने का प्रयास किया और कलाकारों के बीच पश्चिमी कला शैली के प्रभाव को कम करने का प्रयास किया।**
- अभनींद्रनाथ टैगोर को **उनकी पेंटिंग भारत माता और विभिन्न मुगल-थीम वाली पेंटिंग के लिये जाना जाता है।**
- इस शैली के अन्य उल्लेखनीय चित्रकार **नंदलाल बोस हैं। जिन्हें भारत के संविधान के मूल दस्तावेज़ को प्रकाशित करने का कार्य सौंपा गया था।**

चित्र: अवनींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित "भारत माता" (1905)

- **रवींद्रनाथ टैगोर इस शैली से संबंधित हैं।** उनकी पेंटिंग अद्वितीय हैं **क्योंकि उनमें प्रमुख काली रेखाओं का उपयोग किया गया है जिससे विषय बहुत प्रमुख दिखता है। उन्होंने छोटे आकार की पेंटिंग बनाईं।**
- **चित्रकला की क्यूबिस्ट शैली:** चित्रकला के क्यूबिस्ट आंदोलन ने **यूरोपीय क्यूबिस्ट आंदोलन से प्रेरणा ली।**

- इस शैली के अंतर्गत **वस्तुओं को तोड़ा जाता था, उनका विश्लेषण किया जाता था और फिर पुनः जोड़ा जाता था।** कलाकार ने अमूर्त कला रूपों के उपयोग के माध्यम से कैनवास पर इस प्रक्रिया का पुनर्निर्माण किया।
- इसमें **रेखा और रंग के बीच सही संतुलन हासिल करने** का प्रयास किया गया है।
- भारत में सबसे लोकप्रिय **क्यूबिस्ट कलाकारों में से एक एम.एफ हुसैन थे**, जिन्होंने **'पर्सनफिकेशन ऑफ रोमांस'** नामक चित्रों की एक शृंखला बनाई थी।

- **प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप:** इसमें प्रगतिशील और साहसिक विषयों का उपयोग किया जाता है। इसमें **उन विषयों को अधिक अमूर्त विषयों** के साथ एकीकृत किया।
  - इसमें एकरूपता का अभाव होता है, लेकिन **ये यूरोपीय आधुनिकतावाद से प्रेरित थे।** इस कला के **संस्थापक फ्राँसिस न्यूटन सूजा थे** लेकिन अधिक प्रसिद्ध सदस्य एस.एच. रजा, एच. ए गाडे, आरा आदि थे।
  - **यहाँ तक कि प्रसिद्ध क्यूबिस्ट चित्रकार एम.एफ हुसैन भी प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के सदस्य थे।**

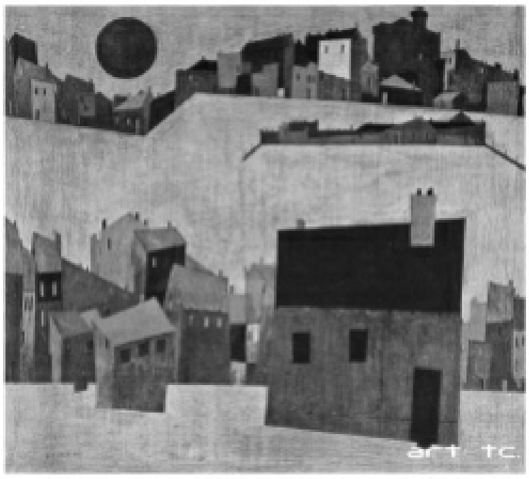

S.H.Raza, Hautde Cagnes, Gouche on Paper

राजा रवि वर्मा कौन थे?

- इन्हें **आधुनिक चित्रकला शैली का प्रवर्तक माना जाता** है। **पश्चिमी तकनीकों और विषयों** के प्रभाव के कारण इनकी शैली को 'आधुनिक' कहा जाता है।

- वह अद्वितीय थे क्योंकि इन्होंने **रंग और शैली की पश्चिमी तकनीकों के साथ दक्षिण भारतीय चित्रकला के तत्त्वों को एक साथ मिलाया था।** वह केरल राज्य से संबंधित थे, उनके शानदार ब्रश स्ट्रोक और लगभग जीवंत चित्रों के कारण उन्हें **'पूर्व का राफेल' कहा जाता था।**
- इनकी **कुछ बहुत प्रसिद्ध कृतियों में लेडी इन द मूनलाइट, मदर इंडिया** आदि शामिल हैं। इन्होंने महाकाव्य रामायण से अपने चित्रों के लिये देशभर में पहचान हासिल की, विशेष रूप से 'रावण के द्वारा सीता का हरण' शीर्षक वाली पेंटिंग के लिये।
- **उन पर हाल ही में एक फिल्म बनी है, जिसका नाम है "रंग रसिया"।**

UPSC विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी है, जो (2017)

(a) अजंता में है
(b) बादामी में है
(c) बाघ में है
(d) एलोरा में है

उत्तर: (a)

प्रश्न. भारतीय कला व संस्कृति के इतिहास के संबंध में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये: (2014)

	विख्यात मूर्तिशिल्प		स्थल
1.	बुद्ध के महापरिनिर्वाण की एक भव्य प्रतिमा जिसमें ऊपर की ओर अनेकों दैवी संगीतज्ञ तथा नीचे की ओर उनके दुखी अनुयायी दर्शाए गए हैं	:	अजन्ता
2.	प्रस्तर पर उत्कीर्ण विष्णु के वराह अवतार की विशाल प्रतिमा जिसमें वह देवी पृथ्वी को गहरे विक्षुब्ध सागर से उबारते दर्शाए गए हैं	:	माउंट आबू
3.	विशाल गोलाश्मों पर उत्कीर्ण "अर्जुन की तपस्या"/"गंगा-अवतरण"	:	मामल्लपुरम

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: C

प्रश्न. निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों पर विचार कीजिये: (2013)

1. अजंता की गुफाएँ
2. लेपाक्षी मंदिर
3. साँची स्तूप

उपर्युक्त स्थलों में से कौन-सा/से भित्ति चित्रकला के लिये भी जाना जाता है/जाने जाते हैं?

(a)केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3
(d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

प्रश्न. प्राचीन भारत में गुप्त काल के गुफा चित्रों के केवल दो ज्ञात उदाहरण हैं। इन्हीं में से एक है अजंता की गुफाओं के चित्र। गुप्तकालीन चित्रों का अन्य मौजूद उदाहरण कहाँ है? (2010)

(a) बाग गुफाएँ
(b) एलोरा की गुफाएँ
(c) लोमस ऋषि गुफाएँ
(d) नासिक की गुफाएँ

उत्तर: (b)

प्रश्न. सुप्रसिद्ध चित्र "बणी-ठनी" किस शैली का है? (2018)

(a) बूँदी शैली
(b) जयपुर शैली
(c) काँगड़ा शैली
(d) किशनगढ़ शैली

उत्तर: (d)

प्रश्न. कलमकारी चित्रकला निर्दिष्ट (रेफर) करती है: (2015)

(a) दक्षिण भारत में सूती वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी
(b) पूर्वोत्तर भारत में बाँस के हस्तशिल्प पर हाथ से किया गया चित्रांकन
(c) भारत के पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में ऊनी वस्त्र पर ठप्पे (ब्लॉक) से की गई चित्रकारी
(d) उत्तर-पश्चिमी भारत में सजावटी रेशमी वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी

उत्तर: (a)

प्रश्न. निम्नलिखित प्रसिद्ध नामों पर विचार कीजिये: (2009)

1. अमृता शेरगिल
2. विकास भट्टाचार्जी
3. एन.एस. बेंद्रे
4. सुबोध गुप्ता

उपरोक्त में से कौन कलाकार के रूप में सुविख्यात है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 4
(c) केवल 2, 3 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (d)

??????:

प्रश्न. भारत की मध्यपाषाण-शिला-कला न केवल उस काल के सांस्कृतिक जीवन को, बल्कि आधुनिक चित्रकला से तुलनीय परिष्कृत सौंदर्य बोध को भी प्रतिबिंबित करती है। इस टिप्पणी का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। (2015)

प्रश्न. भारतीय कला विरासत का संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है। चर्चा कीजिये। (2018)

प्रश्न. भारतीय कला में "बाँसुरी बजाते कृष्ण" बहुत लोकप्रिय हैं। चर्चा कीजिये। (2012)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/indian-painting-part-i-